

# आफत से राहत

## Aafat Se Rahat

**Outside Bhatti Class**

**Class Date-08.02.2020**

**BK Dr. Sachin Bhai Ji**

**@ Divya Sanskar Bhawan**

**Brahma Kumaris, Narsinghpur (M.P.)**

ओम शांति। एक घने जंगल में एक गर्भवती हिरणी प्रसवपीड़ा से व्याकुल, एक स्थान ढूँढ रही थी और वो एक नदी के सामने आ जाती है। नदी ऊफान पर है, नदी में बाढ़ आ गई है और जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो घना जंगल, अब उसमें आग लग गई है और थोड़ी देर वहां रूकी ही थी तो देखा- दायें तरफ से एक खूंखार शेर आ गया और थोड़ी देर में देखा कि बाएं तरफ एक शिकारी बाण लेकर खड़ा है। आगे नदी थी, पीछे जंगल में आग लगी है, एक तरफ शेर है और एक तरफ शिकारी है। ऐसी विपदा की घड़ी में उस हिरणी ने आसमान की तरफ देखा, बादल छाए थे। आहद पुकार निकली - हे प्रभु! रक्षा करो, हे प्रभु! दया कर, इस विपदा से, इस आफत से, इस मुसीबत से मुझे छुड़ाओ और अचानक आसमान में बिजली कौंध जाती है और शिकारी का ध्यान बट जाता है, और शिकारी बाण चलाता है बाण सीधा शेर को जाकर लग जाता है और शिकारी डर जाता है क्योंकि घायल हुआ शेर। शेर पीछे मुड़ जाता है, शिकारी भाग जाता है और तुरंत बारिश होने लगती है और बारिश से जंगल की आग बुझ जाती है और वो हिरणी अपने बच्चे को जन्म देती है।

चारों तरफ से विपदा कोई सहारा नहीं, कोई मदद नहीं और अचानक ऊपर से मदद आ गई और मदद भी ऐसी आई कि सारे संकट एक साथ समाप्त हो गये। जब हृदय से आहद पुकार निकलती है तो अपने आप मदद आती है। अभी-अभी शांतिवन में मुरली चली थी। **बाबा ने उसमें एक मंत्र दिया था । कौन सा? बाबा, मेरे बाबा, मेरे साथी, आ जाओ, और क्या करो ? मदद करो।** जब चारों तरफ से संकट हो, चारों तरफ विपदा हो, तब एक भगवान ही आधार है। एक उसकी शरण मात्र संबल है। तो इस ब्राह्मण जीवन में भी ऐसी बहुत सी घटनायें आयेंगी, ऐसी बहुत सी बांते होंगी, ऐसी बहुत सी कठिनाई, मुश्किलें, पेपर, इम्तिहान, आजमाइशें आयेंगी और यदि उस समय बाबा को याद किया जाये, और दिल की गहराई से याद किया जाये तो बहुत से ब्राह्मणों का अनुभव है, कि अचानक मदद आ जाती है, अचानक अदृश्य हाथ आ जाता है, और हमारी मदद करके चला जाता है। भरते हुये किसी ने न देखा, पर

झोली भर जाती है, कदम-कदम पर मदद तुम्हारी ये एहसास दिलाती है, सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।

दूसरा महायुद्ध हो रहा था और एक सैनिक थोड़ा घायल हो गया। उसके सारे साथी मर गये और उसके पीछे शत्रु की सारी सेना, वो अकेला। बाकि सबके पास बंदूकें और वो भाग रहा है। पीछे से दुश्मन और वो सारे सैनिक, वो भाग रहा है, भाग रहा है, भाग रहा है और ये जो सैनिक है, वो भगत है, भगवान को मानने वाला है। अंदर ही अंदर प्रार्थना कर रहा है- कि हे प्रभु! मेरी रक्षा करो। भाग रहा है, भाग रहा है, भाग रहा है, भागते-भागते एक खण्डहर सा घर उसे दिखाई देता है, उस घर में प्रवेश कर जाता है। उस घर में बहुत सारे कमरे बने हुये है, खाली है, कोई नहीं रहता वहां। एक कमरे के अंदर घुस जाता है, और घुटनों के बल गिरकर भगवान से प्रार्थना करता है कि यदि सच्चे दिल से मैंने तेरी भक्ति की हो, तुझे याद किया हो तो मेरी रक्षा कर और जब वो ये प्रार्थना कर ही रहा था, तो एक मकड़ी आ जाती है उस दरवाजे के पास और अपना जाल बुनने लगती है। मकड़ी की तरफ उसका ध्यान जाता है, और उसे मन ही मन हंसी भी आती है, कि हे प्रभु मैंने तुझे मदद मांगी थी। तूने एक मकड़ी को भेज दिया, ये मेरी क्या मदद करेगी? और थोड़े ही देर में वो सारे सैनिक दुश्मन के, उस खण्डहर में प्रवेश कर जाते हैं। पकड़ों, देखों कहां है? शूट, उनके जूतों की आवाज- टक, टक, टक। कोई इधर घुस रहा, कोई उस कोने में, कोई इस कोने में, यहीं पर होगा मारो, छोड़ो नहीं, अलग-अलग आवाजें आ रही है, और वो एक कमरे में अंदर है। दो सैनिक उस कमरे के बाहर आते हैं, और देखते हैं वहां तो मकड़ी का एक जाल है अर्थात् लंबे समय से अंदर कोई नहीं गया है, और वो दोनों लौट जाते हैं और थोड़ी ही देर में सारे सैनिक लौट जाते हैं और जब ये सिपाही देखता है कि अब कोई आवाज नहीं फिर से घुटनों के बल गिरता है, और आंखों से आंसू बहने लगते हैं *O Lord! Thy ways are past our understanding* तू जो है, तू जैसा है, तू जिस रीति से कार्य करता है, वो हमारी बुद्धि से परे है, हम समझ ही नहीं सकते तू किस तरह कार्य करता है। तू जो करता है, तेरी योजना *द डिवाइन प्लैनिंग* बहुत कल्याणकारी है परंतु आंख उनको देख नहीं सकती, इसीलिये संशय करती है पर यदि हम अपने जीवन को देखें तो आज तक जीवन में जो-जो मुसीबतें आई है, उसमें से हम किस तरह से बाहर निकलें। अगर सूक्ष्मता से गहराई से, हम चिंतन करें, तो पता चलेगा उसमें हमारा किया हुआ बहुत कम था। जो कुछ हुआ वो अपने आप हुआ। हम तो बहुत कोशिशें कर रहे थे, उन कोशिशों से कुछ नहीं हुआ, कुछ और हुआ जिसने मदद कर दी और वो जो था, वो कुछ और था, वो उसका हाथ था और सेवाओं में भी सभी ने अनुभव किया होगा कैसा बाबा मदद करता है।

यूरोप में एक मूर्ति मिली, घमासान युद्ध हुआ। दुश्मनों ने सारे मंदिर, गिरजाघर तोड़ दिये। एक जीजस क्राइस्ट का पुतला था, वो भी तोड़ दिया। पर युद्ध के बाद जब भक्त लोगों ने देखा, वो जो पुतला था, बहुत ही बुरी तरह से टूट गया था। बाकि जो चीजें थी थोड़ी बहुत जोड़ दी, पर दो हाथ तो थे ही नहीं, और मिले भी नहीं। कहां चले गये? उस पुतले के, जो कि ईसा मसीह का पुतला था। तो लोगों ने कहा कि नये हाथ बना दिये जाये और पुतले को फिर से पुर्नस्थापन किया जाये। पर किसी का कहना था- नहीं, जो प्राचीन पुतला है, ऑरीजनल स्टैच्यू है हम वैसा ही रखेंगे। हम नहीं चाहते कि इसमें नये हाथ जोड़े जायें, कृत्रिम जोड़कर लगा दिये जायें तो क्या किया जाये? वो पुतला आज भी है वहां पर, वैसा ही पड़ा है, बिना हाथों के और नीचे किसी एक विचारक ने एक विचार दिया, कि ये लिख दो और वो जो लिख दिया नीचे, वो एक ऐसा लिख दिया, कि वो यादगार बन गया क्या लिखा होगा नीचे? यू ऑर माय हैण्डस, तुम मेरे हाथ हो। क्या लिख दिया? कि मेरे हाथ तुम हो। मेरे अपने हाथ नहीं है, तुम्हारे हाथों से मैं अपना कार्य करता हूं, तुम बाप की भुजायें हो। तो हम उसकी भुजायें है। वो हमारे द्वारा कार्य करता है, और हम अगर निमित्त है तो ये कार्य, हमें ये नहीं भूलना चाहिए कि ये मेरा नहीं ये उसका है। *पग बिनु चले, सुने बिनु काना*। वो तो निराकार है, हमारे द्वारा कार्य करता है। पर हम जहां निमित्त है तो जिम्मेवार वो है। तो चाहे जीवन में जो भी परिस्थिति आ जाये, जैसी भी समस्या आ जाये। यदि आत्मा समर्पण कर दे, उस समय जैसे उस हिरणी ने समर्पण कर दिया क्या था उसके हाथ में, शून्य में चली गई वो, अब मेरा कुछ भी नहीं है, बचने का कोई मार्ग नहीं है। कैसे बचूं? आगे नदी, पीछे आग, एक तरफ शिकारी, एक तरफ शेर। कितनी भी कोई बुद्धि लगाये क्या बच सकता है, इस परिस्थिति से? एक ही मार्ग है, सारे विचारों को शून्य कर दो और समर्पण कर दो तो आफत में राहत स्वतः ही मिल जायेगी। इस ब्राह्मण जीवन में भी बहुत सी परिस्थितियां आयेंगी जिनको हम कहेंगे आफत। प्राकृतिक आपदाओं जैसे वो आफतें होंगी। ऐसी कुछ परिस्थितियों की हम चर्चा करेंगे जो हमें पार करनी होंगी, **ऐसी सात परिस्थितियों (आफतों) की हम चर्चा करेंगे -**

**1. पहला : अंधकार** - कौन सा अंधकार ? अहंकार का अंधकार। अहंकार के अंधकार से उत्पन्न परिस्थितियां। हमारी बहुत सी परिस्थितियों के जनक हम स्वयं है और वो परिस्थितियां हमारे मैं से उत्पन्न हुई है, मैं राइट हूं, मैंने जो कहा बस वहीं होना चाहिए, मैंने जो सोचा वहीं होना चाहिए, मैं जो सोचती हूं, जो करती हूं, वही राइट है - ये अहंकार अंधकार को पैदा करता है। इसीलिये अपने अहंकार को थोड़ा कम करना है। संसार में दो व्यक्तियों के बीच जो भी रिश्ते हैं, उन रिश्तों में जो भी दूरी है, जो रूकावटें है, जो कड़वाहट है। उसका कारण है कि दोनों भी झुकना नहीं चाहते। परंतु यदि रिश्तों को बचाना है तो

एक को झुकना पड़ेगा और जो अहंकार से खड़ा रहता है, धीरे-धीरे वहां अंधकार छा जाता है। पर अंधकार से क्या खतरा है? अंधकार से नुकसान? क्या होता है? डर लगता है और अंधकार में क्या होता है? ठोकर लगती है। अंधकार में क्या होता है? क्या होता है अंधकार में ? कुछ भी दिखाई नहीं देता और अंधकार में क्या होता है? चोट लग जाती है, गड्डा हो तो दिखाई नहीं देता, गड्डे में गिर सकते हैं और अंधकार में क्या होता है? सबने देखा है अंधकार? हम कितना भी ध्यान से चलें पर दूसरा हमसे टकरा सकता है। हम पत्थर से टकरा सकते हैं, फिसल सकते हैं, गड्डे में गिर सकते हैं। डराता है अंधकार, और क्या होता है अंधकार में? जंगली जानवर। आवाजें आती है अजीबो-गरीब। किसी जंगल से कोई कहे तो दिन में गुजरों और कहे रात को 12 बजे जाओ तो? बाबा पहाड़ी गये सभी, मधुवन में? दिन में कहो जाओ तो आराम से जायेंगे, योग करके आयेंगे। आधी रात को कहो जाओ, 12 बजे तो भालू। डराता है, अंधकार और अंधकार में भटक जाता है। क्या करता है अंधकार? भटका देता है, रास्ता दिखाई नहीं देता। कहीं के कहीं चले जाते हैं। अहंकार का अंधकार भी भटकाता है, ठोकर लगती है, गड्डे में गिरते हैं पैर फिसल सकता है, कोई हमसे टकराता है। समझ नहीं आता कहां जाना है और जंगली जानवर मिल जाते हैं। वो हंसी की बात सुनाते हैं- इधर से ब्रह्माकुमारी और इधर से भालू आ गया। तो भालू को देखते ही बहन जी ने आंख बंद कर ली। भालू ने कहा, क्या कर रही हो? उसने कहा बाबा को याद कर रही हूं। उसने आंख खोली तो देखा, भालू भी आंख बंद करके खड़ा है। उसने कहा- तुम क्या कर रहे हो? वो कहता है- भोग लगा रहा हूं। यदि जीवन में अंधकार छा गया है। कुछ समझ नहीं आ रहा है, हो सकता है मेरा अहंकार इसका कारण है। अंग्रेजी में कहावत है- इन द बैटल ऑफ ईगो द विनर इज लूसर (in the battle of ego, the winner is looser)। अहंकार के युद्ध में जो जीतता है वो वास्तव में हारता है। उसकी जीत नहीं होती वो वास्तव में हार जाता है। जिसने ये सिद्ध कर दिया कि तुम गलत हो, मैं राइट हूं, जीत उसकी नहीं हुई, वो वास्तव में हारा है। गणित आध्यात्म का दूसरा है। तो जब-जब अहंकार का अंधकार छा जाये। सबसे पहले तो समर्पण करना है बाबा के सामने, स्वीकार करना है कि ये जो परिस्थिति उत्पन्न हुई है, मेरे ही अहंकार से उत्पन्न हुई है और इसका इलाज है कि मैं चुप रहूं, हार मान लूं, गलती स्वीकार कर लूं। तुम जीते, मैं हारा - इस हार में ही जीत है, इस हार से ही भगवान के गले का हार बनेंगे। जीतने दो दूसरों को। कर्ण का निर्णायक युद्ध है, अर्जुन के साथ। दूसरे दिन उसके गुरु परशुराम उसके स्वप्न में आकर कहते हैं- कर्ण तुम जीत अर्जुन को दे दो क्योंकि तुम देने के लिये प्रसिद्ध हो लेने के लिये नहीं, दे दो, जीत दे दो उसको जीतने दो, वो संबंध बच जायेगा। नहीं तो संबंध नष्ट हो जायेगा। कितने संबंध नष्ट हुये अहंकार के वजह से जहां दोनों ही झुकने को राजी नहीं। दो पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़े हुये हैं। दो व्यक्ति, दो

मित्र, दो बहनें, दो भाई, युगल, कोई भी हो सकता है। भाई-बहन, दो पक्ष, दो पार्टियां, दो संस्कार, दो शब्द, दो हृदय सबसे बड़ी आफत तो यही है और राहत का कार्य यदि करना है, तो स्वयं को झुका दो।

**2. दूसरा : बिजली** - कौन सी बिजली? बैड न्यूज (bad news) अभी-अभी ठीक है, और अभी-अभी फोन आ गया। एक्सीडेंट हो गया है अभी-अभी फोन आ गया - हमारा अपना स्वजन अचानक से बीमार पड़ गया है, सीरियस है, डॉक्टरों ने जबाव दे दिया है। बैड न्यूज, अभी-अभी न्यूज आई कि बिजनेस पार्टनर धोखा देकर भाग गया। अभी-अभी न्यूज आ गई जितने पैसे थे सब खलास गये, बैड न्यूज। एक माता थी मुंबई की, उसके साथ उसने एक कुमार को रखा जो ज्ञान में चलता था, अच्छा था पर इतना विश्वास कर लिया उस पर, इतना विश्वास कर लिया उस पर, माता करोड़पति थी, उसका अपना कोई नहीं था और उस कुमार ने कहा- मुझे विदेश जाना है नौकरी के लिये। उस कुमार के पीछे उसने लगभग 18 लाख रूपये लगाये और कुमार जो गया तो हमेशा के लिये चला गया, वापस ही नहीं आया आज तक। अब माता जी को बस 18 लाख रूपये ही दिखते रहते हैं योग में, दूसरा कुछ दिखता ही नहीं। अचानक आने वाली परिस्थितियां बैड न्यूज हिला देती है आत्मा को। क्या हम हर प्रकार के बैड न्यूज के लिये तैयार है? बिजली जैसी गिरती है, बिजली कड़कती है। समझ नहीं आता है क्या करें? इसीलिये बाबा ने कहा है- एवररेडी रहो। अभी इसी वक्त भगवान यहां आ जाये और कहे- चलो मेरे साथ कौन-कौन तैयार है? चलो हाथ खड़ा करना, इतने और घर फोन नहीं करना है? बताना नहीं, चाबियां कहां रखी है? एटीएम नंबर बगैरह किसी को कुछ बताना नहीं है? इतने नष्टोमोहा। अरे वाह। भगवान तो खुश हो जायेगा, ये हैं मेरे स्टूडेंट। स्वयं को तैयार रखना है, हर परिस्थिति के लिये। **बाबा के महावाक्य है- इन आंखों से जो कुछ देखते हो वो आंखों सहित नष्ट हो जायेगा।** महात्मा बुद्ध निकल पड़े घर से, पत्नी को देखा, बच्चे को देखा आधी रात को। वो सारथी था चन्ना, नदी के निकट आये, अपने बाल काटे। चन्ना कहने लगा- एक बार पीछे मुड़कर तो देखो सिद्धार्थ, एक बार पीछे मुड़कर देखो, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारा बच्चा, राज प्रसाद, इतना बड़ा साम्राज्य, इतना बड़ा सम्राट होने का भाग्य, सब कुछ छोड़कर जा रहे हो। कुछ तो सोचो? महात्मा बुद्ध पीछे देखते हैं और कहते हैं- मुझे केवल आग की लपटें नजर आ रही है बस और कुछ भी नहीं। सब भस्म हो रहा है, सब कुछ नष्ट हो रहा है, सब कुछ जलकर خاک हो रहा है। रोज ये अभ्यास करना है। कौन सा? अपनी ही मृत्यु का दर्शन करना है। अंग्रेजी में एक कहानी है, जिसमें ऐसा लिखा है- कि विदेश में जब भी चर्च की घण्टी बजती थी। अचानक समझ लेना किसी की मृत्यु हुई है। कवि लिखता है-

*Each man's death diminishes me, For I am involved in mankind.*

*Therefore, send not to know For whom the bell tolls, It tolls for thee.*

जब भी चर्च की घण्टी बजे तो *It tolls for thee* - यह तुम्हारे मृत्यु की घण्टी है। ये सोचना कि मैं मरा हूँ। कौन मरा? तुम खुद, ये सोचना। अपने ही मृत्यु का नजारा देखना। आत्मा निकल गई है, मृत शरीर पड़ा हुआ है। लोग क्या कह रहे हैं? उनकी बातें भी सुनना मेरे अपने क्या सोच रहे हैं? जब जल रहा है शरीर। किसी-किसी को पता भी नहीं है। मधुबन में पता भी नहीं चलता, पता किचिन में चलता है, जब हल्वा बनता है, तो पूछते हैं आज कौन गया? तब पता चलता है, अच्छा वो गया। तो देखना है, ये जो मेरा शरीर है, जिससे इतनी आसक्ति है। ये ही नहीं रहेगा एक दिन। जल रहा है चिता पर और लोग क्या खुसर-पुसर कर रहे हैं वो भी सुनना। क्या कह रहे होंगे लोग? क्या कहते होंगे? कोई कहता होगा- बहुत अच्छा हुआ, रास्ता साफ हुआ। गया, रास्ते का कांटा निकला एक बार फिर। सीट लेकर बैठा था, अब कुर्सी खाली हुई। अब रास्ता बहुत अच्छा। कोई कहता होगा- अच्छा हुआ, धरती का बोझ कम हो गया थोड़ा। सुनना लोगों की बातें, वो जो हमें कहते थे, हम तुम्हारे हैं, हम तुम्हारे हैं, अंदर ही अंदर खुश हो रहे हैं। एक व्यक्ति गुरू के पास जाता है। कहता है- सबसे मुझे वैराग्य है, परंतु मेरी जो पत्नी है उसका मुझसे इतना प्यार है, इतना प्यार है, मैं क्या बताऊं, शुद्धतम प्रेम। प्रेम की पराकाष्ठा है वो, जरा सा स्वार्थ नहीं है, कुछ भी नहीं, ऐसा दिव्य प्रेम मैंने आज तक नहीं देखा। गुरू कहता है ऐसा हो नहीं सकता। वो कहता है- मुझे तो आपके पास आना तो है, परंतु ये पत्नी के वजह से रूका हुआ हूँ। गुरू कहते हैं- ठीक है, एक काम करो तुझे एक जड़ी बूटी देता हूँ, ये जाकर खा लेना और एक विचित्र सा आसन लगाना। तुम बेहोश हो जाओगे ऐसा लगेगा लोगों को कि ये मर गया। वो जाता है आसन जमाता है, उलट-पुलट और खा लेता है और सब लोगों को लगता है मर चुका है रोने लगते हैं सब। पत्नी तो इतना रोती है, इतना रोती है बात मत पूछो। घर का दरवाजा जो है, वो थोड़ा छोटा है चंदन की लकड़ी का बना हुआ है। जब उसे बाहर लेकर जाने लगते हैं, तो वो निकलता ही नहीं है उसमें से, क्योंकि आसन ही उल्टा-पुल्टा लगाकर रखा है। लोग कहते हैं- ये जो चंदन का दरवाजा है, इसे काटो। पत्नी कहती है- चंदन का दरवाजा? चंदन के दरवाजे को मत काटो, पहले इसके पैर काट दो न। वैसे भी तो मर चुका है और जैसे ही वो सुनता है, खड़ा हो जाता है और **प्रस्थान जंगल की ओर।**

सब स्वार्थी हैं। कौन सा प्रेम, और कैसा प्यार? सब कुछ नष्ट होते देखना है। ये जो घर बनाया भस्म हो जायेगा। ये जो शरीर जिसको ऐसा पकड़कर रखा है, इतना श्रृंगार करके रखा है। हमें याद है



हॉस्पिटल में एक बार युगल आये और वो घूम रहे थे वहां नक्की, अनादरा और जो उसकी पत्नी थी, अभी-अभी शादी हुई 15 दिन पहले वो गिर गई, पत्थरों से आबू में कहीं और तुरंत लेकर आये, जब आई मर चुकी थी और वो भाई इतना रो रहा है, इतना रो रहा है, इतना रो रहा है अस्पताल में जो सामने की सीढ़िया हैं वहां बैठकर जार-जार रो रहा है। इतना रो रहा है, इतना रो रहा है, कि पता नहीं क्या हो गया उसके साथ? कितना प्यार अथाह प्यार। उसको देखकर लग रहा था, वाह प्यार हो तो ऐसा। एक महीने के बाद ओ पी डी में आ गया कॉर्ड लेकर, डॉक्टर साहब शादी में जरूर आना। अभी एक मास भी नहीं हुआ है।

**नष्ट होते हुये देखना, तो फिर दुःख नहीं होगा, नहीं तो बहुत दुःख होगा। ये जो धन के अंबार लगाये हैं, सब खत्म हो जायेंगे, सबको आग लगनी है, भंभोर को आग लगेगी- भगवानुवाच।** कुछ नहीं बचेगा। योग में ये भी प्रयोग करने हैं सब कुछ जलता हुआ देखने की। लाशें बिछी हैं, लाशों पर चल रहे हैं। नहीं तो स्वजनों की मृत्यु और स्वजनों की बीमारी बड़े-बड़े योगियों को नीचे गिरा देती है। जो दूसरों को जीवन भर सिखाते हैं, आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है, तुम आत्मा हो। तुम शरीर नहीं हो, उनका अपना कोई चला जाता है तो आत्मा-वात्मा सब गया। दूसरे का कोई गया तो उसको कहते हैं, ड्रामा कितना आसान है और अपना कोई गया तो फिर ड्रामा याद नहीं आता है। तो ऐसी बिजलियां गिरेंगी, बेड न्यूज की। अचानक कोई खबर।

एक व्यक्ति रो रहा है, उसके इतने बड़े घर को आग लग गई। लोग खड़े हुये हैं, घर जल रहा है आलीशान। वो रो रहा है, रो रहा है, इतना रो रहा है। उसका बेटा भागकर आता है, छोटा लड़का, कहता है- पिताजी आप रो क्यों रहे हो? वो कहता है- रोऊं नहीं क्या? देखो घर को आग लग रही है। वो कहता है- पिताजी ये घर तो मैंने कल रात को ही बेच दिया था। वो कहता है क्या? बेच दिया था। घर अभी भी जल रहा है, पर आंसू खत्म, घर जल रहा है, घर पहले भी जल रहा था, अब भी जल रहा है, पर अब आंसू नहीं है। बीच वाला बेटा आता है, पिताजी हमारा घर जल रहा है, पिताजी कहते हैं- घर जल रहा है, पर तेरे छोटे भाई ने इसे बेच दिया था, कल रात को ही। बीच वाला कहता है- बेच तो दिया था, पर पैसे अभी तक मिले नहीं हैं, खाली एग्रीमेंट हुई थी। क्या? फिर से रोना चालू आंसू-आंसू बह रहे हैं आंसू, आंसू, आंसू, आंसू। वो अब थोड़े ही देगा बात हुई थी खाली लेन-देन कहां हुई? फिर से रोना चालू, घर अब भी जल रहा है। थोड़ी देर के बाद बड़ा बेटा आता है- पिताजी आप रो क्यों रहे हो? पिताजी कहते हैं- हमारा घर जल रहा है और जिसको बेचा था, वो अब थोड़े ही लेगा। बड़ा बेटा कहता है- नहीं, वो अपने वचन का पक्का है, जिसको बेचा था। उसने कहा है- घर जल भी जाये तो भी मैं लूंगा। क्या? आंसू खत्म। घर अब भी जल रहा है। क्यों हो रहा है ऐसा? मेरा आंसू ला रहा है, घर का जलना आंसू नहीं ला रहा है। **ये मेरा है- ये**

**आंसू ला रहा है। ममत्व आंसू लाता है, ये ममत्व मिट जाये तो आंसू भी बंद। इस संसार में मेरा कुछ भी नहीं है।**

अब्दुल कलाम। पांच साल के बाद जब उनका टर्म पूरा हो गया, प्रेसीडेंट का। प्रेसीडेंट हाऊस से जब निकले एक छोटी सी बैग थी। वो ही बैग लेकर अंदर गये थे, 5 साल के बाद जाते समय बस एक बैग थी, कुछ भी लेकर नहीं गये। हम मधुबन कितनी बैग लेकर जाते हैं- 1 और आते समय कितनी होती है- 4। ये भी खरीद लूं वो भी खरीद लूं बहू के लिये, ननद के लिये, पोते के लिये कुछ तो चाहिए ना आबू वाली चीज। सुना है, वहां पर चप्पल अच्छी मिलती है। ये भी लूं वो भी लूं वो भी खरीदूं। सारी वस्तुएं भरकर रखी हैं। जितनी आसक्ति उतना दुःख, जितना ममत्व उतना दुःख, जितना मेरा का भाव उतना दुःख। मेरा छूटता जाये, मेरा कुछ है ही नहीं। ये पति, ये पत्नी, ये बच्चे, ये घर। मैं ट्रस्टी, संभालने के लिये दिया है बस। एक दिन सबको जाना है। एक ज्ञान में चलने वाली माता उसके पति ने शरीर छोड़ दिया। उसे कोई दुःख ही नहीं। घर से सारे लोग दुःखी, उसको कह रहे तुम रोना। वो कहती- मैं क्यों रोऊं? वो आत्मा थी, निकल चली गई। इतने लोग आये देख रहे हैं, माता क्या स्थिति है? जरा दुःख नहीं, ऐसे बहुत कम है। **ज्ञान दाताओं की कमी नहीं है संसार में, पर जो स्वरूप हैं, उनकी कमी है।** इसीलिये बिजलियां कड़केंगी, बिजलियां गिरेंगी। पर अपने आपको पहले ही तैयार कर देना है, ताकि वो जब हो तो कोई आश्चर्य नहीं कोई भी चीज का आश्चर्य नहीं। जैसे पहले से ही पता था।

**3. तीसरा : खाई** - खाई में गिर जाते हैं, कौन सी खाई? उदासी की खाई। नैराश्य, निराशा। हमें पता है- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, अलबेलापन शत्रु है **पर इनसे भी बड़ा शत्रु अगर कोई है तो वो है उदासी, डिप्रेशन।** उदास रहती है आत्मा। खून की जांच, सब नार्मल। शरीर में कोई दोष नहीं है, पर मन अवसादग्रस्त है, मन में खुशी नहीं है और कई बार ऐसी खाई में हम गिर जाते हैं, और उस खाई से स्वयं को बाहर निकालना मुश्किल हो जाता है। आवश्यकता है पहला **डायगनोसिस** निदान करना है, कि ये जो मुझे हो रहा है ये उदासी है, ये डिप्रेशन है, इसमें मुझे डॉक्टरी इलाज की आवश्यकता है, कुछ समय के लिये। साथ-साथ काउंसिलिंग। क्योंकि कई बार उदासी से व्यक्ति स्वयं निकल नहीं पाता, उसे मदद लेनी पड़ती है, और भारत में बहुत ज्यादा। विदेश में लोग डिप्रेशन के साथ आते हैं, सीधा कहते हैं- आइ एम इन डिप्रेशन। ये-ये दवाई चालू और भारत में छिपाया जाता है। कलंक जैसा समझा जाता है, सोचते हैं मेरे जीवन में वो घटना हुई उसकी वजह से ऐसा चल रहा है। पर उस घटना को गये कितने साल हो गये, अब तक उदासी गई नहीं है। अच्छा होता कुछ इलाज ले लिया होता



और निकल गये होते बाहर। वैसे तो खुद ही निकलना है, ज्ञान के आधार से पर उदास व्यक्ति ज्ञान को भी तो नहीं समझ पाता, ज्ञान का चिंतन कहां कर पाता है। वो तो अपने दुःख में डूबा रहता है, बस छोटी-मोटी जो जीवन में घटना हुई उसी को पकड़े हुये है। दस साल पहले, उसने मुझे ऐसा कहा था, बस सबके सामने अपमान कर दिया था। तब से उदास में चले गये, आज तक उदासी से बाहर नहीं निकल पाये। अपने आपसे खुद ही संघर्ष कर रहे हैं। न किसी के साथ शेयर किया, न किसी को वो बात बताई।

हमारे ओ पीडी में एक विदेश की बहन आई। उसने कहा- मुझे 30 साल से डिप्रेशन है, इतनी सारी फाइलें। कितनी दवाइयां डिप्रेशन की अलग-अलग पद्धति की, इतना लंबा डिप्रेशन और देखने में तो सब ठीक। बात अच्छे से करते हैं सब, पर उदासी है अंदर से। ऐसा भी नहीं की सेवा नहीं कर रही है, सेवायें भी कर रही है, पर अंदर से उदासी से दवाइयां चालू हैं। उसका थोड़ा कांउसिलिंग हुआ और पता चला 30 साल पहले जब वो ज्ञान में नहीं थी। उसे एक युवक से प्रेम था, प्यार हो गया था, बहुत ज्यादा प्यार। उससे शादी भी करना चाहती थी, पर उसकी जो छोटी बहन थी। कुछ कारण ऐसे बने कि छोटी बहन ने उसके साथ शादी कर ली और वो अपनी छोटी बहन से भी बहुत प्यार करती थी। पर उसे ऐसा लगा जैसे उसका अधिकार उसकी बहन ने छीन लिया है और उसी समय उसी दुःख के वजह से उसने कोर्स किया और वो ज्ञान में आ गई। ज्ञान में आज 30 साल से चल रहे, पर वो जो भाव की मेरी बहन ने मेरे साथ धोखा किया, मेरी वस्तु को छीन लिया, इस भाव ने उसके अंदर उदासी भर दी और वो उदासी इतनी गहरी, इतनी गहरी कि ऊपर से अमृतवेले, मुरली क्लास, सारे दिन भर सेवायें, पर डिप्रेशन बना हुआ है अंदर ही अंदर, वो गया ही नहीं। फिर बाद में दवाइयां चालू हुई, फिर दवाइयों का डोज बढ़ा। कितने डॉक्टरों के पास गई, माफ नहीं कर पाई। उसे कुछ ऐसे अभ्यास दिये गये, कि रोज अमृतवेला अपनी ही बहन को देखो, और उसे रोज माफ करो। उस भाई को भी, उसको भी माफ कर दो। जो हो गया वो हो गया और जब उसने रोज ये अभ्यास किया, धीरे-धीरे-धीरे-धीरे उसका डिप्रेशन निकल गया, सारी दवाइयां बंद हुई। छोटा सा काम करना था उसको, जो उसने तब नहीं किया। बदले का भाव रह गया अंदर, और दब गया वो, ज्ञान-योग ने दबा दिया उस भाव को। दमन हुआ दमन, सप्रेशन, रिप्रेशन। तो जहां-जहां दमन होगा कोई भी चीज का, वहां सुनामी आयेगी एक दिन। इसके लिये उदासी ही वो खाई है, और ये भी आयेगी। जीवन में ढेर सारी परिस्थितियां आयेंगी। गीत में सुना- जीवन से न हार ओ जीने वाले। जब-जब गिरो, फिर से खड़े हो जाओ, खुदी-खुद को हिम्मत देनी है। सेल्फ इंस्पेरेशन, सेल्फ मोटीवेशन (self inspiration, self motivation) नहीं दे सकते तो मदद लो फिर और मदद लेने के लिये, कैसी

हिचक? राय लेना अच्छी बात है। रामायण में दिखाया है- राम को पता है, रावण को कैसे मारा जाये फिर भी यहां वहां मार रहा है, सिर कांट रहा है, फिर-फिर आ रहे हैं सिर। विभीषण से राय लेता हैं- क्या करूं? विभीषण कहता है- नाभी में मारो। राय लेना, सजेशन लेना, एडवाइस लेना, किसी से पूछना, क्या किया जाये? किसी-किसी को बहुत छोटा लगता है ये राय मांगना। हम और किसी से पूछें? हम नहीं पूछेंगे किसी से। भक्ति मार्ग में गुरू किसने-किसने किया था जरा हाथ खड़े करना, माताओं ने ज्यादा गुरू किये। भाईयों ने कम, भाई कहते हम ही गुरू है सबके। हम सिखायेंगे सबको। राय पूछना, राय मांगना, सजेशन लेना कि मेरी ये परिस्थिति है, मैं क्या करूं? उसमें अहंकार नहीं।

*तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।*

*उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः*

गीता में लिखा है- जब गुरू के पास जाओ, नम्रता से जाओ। *तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया*। उसकी सेवा करते हुए प्रश्न पूछो? कई बार तो हमें ऐसे फोन आते, धमकी वाले - आपके पास टाइम किता है? मुझे आधा घण्टा चाहिए, देना हो तो दो नहीं तो जाओ। ये प्रश्न पूछते, ये नहीं देखते सामने वाला क्या कर रहा है? उस समय *परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते* फिर वो उपदेश करेगा गुरू जिससे पूछ रहे हो, *ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।*

पूछना है चौराहे पर खड़े कहां जाऊं? इधर जाऊं या उधर जाऊं? सेवाकेन्द्र या घर, नौकरी या इधर का जीवन? फुल टाइम जॉब या पार्ट टाइम जॉब? मधुबन या घर? ढेर सारे प्रश्न हैं। पूछना है, अनुभवी व्यक्तियों से, वो राय देंगे और **जरूरी नहीं, उन्होंने जो कहा वो करना है**। राय सबसे लेनी है ऑप्शन्स ढूंढनें है ये कर सकते हैं, ये कर सकते हैं, बाकि करना वहीं जो अमृतवेला बाबा टच कराये सुबह-सुबह और जब भी जीवन में बहुत बड़ा, महत्वपूर्ण निर्णय लेना है, कम से कम तीन अमृतवेला गुजर जाने चाहिए, तुरंत निर्णय नहीं लेना। बहुत महत्वपूर्ण, जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय इम्पोर्टेंट डिसेजन टाइमिंग सुबह 2 से 5 बजे। continuous तीन दिन, मोर्निंग 2 बजे से 5 बजे तक बाबा के सामने। बहुत ही बड़ा डिसेजन है, सब कुछ कर लिया, युगल को सारे प्रयत्न कर लिये समझाने के, फिर भी नहीं मानता है, फिर भी पवित्रता के लिये झगड़े हैं क्या करना है? अलग हो जाना है कि साथ में चलना है? बहुत बड़ा डिसेजन। घर पर रहना है छोड़ देना है? बड़े डिसेजन्स तुरंत नहीं लेने हैं। कोई भी डिसेजन, जॉब इधर करना है, उधर करना है? कैरियर, प्रोफेशन, इसको छोड़ दूं या चालू रखूं? Minimum 3 days

**4. चौथा : रेगिस्तान-** अकेलेपन का रेगिस्तान। अकेला महसूस होता है, कोई भी नहीं मेरा। भगवान भी दूर-दूर नजर आता है, तन्हा-तन्हा लगता है, अकेलापन और हर व्यक्ति अंदर ही अंदर अकेलापन महसूस करता है। सब कुछ होते हुए भी अंदर अकेलापन है। पत्नी, बच्चे, पति, घर, परिवार, जॉब, पोजीशन, पैसा सब है सब अच्छा है, पर अंदर से खालीपन है। क्यों? **अपनी डायरी में लिखकर रखना है- आत्मा अनंत है और अनंत की प्यास केवल अनंत ही बुझा सकता है। इस संसार का कोई व्यक्ति, वैभव, वस्तु कभी नहीं बुझा सकते।** जब तक आत्मा प्रभु प्रेम में डूब नहीं जाती, सराबोर नहीं हो जाती, उसका ये अकेलापन कभी भी नहीं जायेगा। हमेशा खालीपन रहता है, सबकुछ करने के बाद भी। सेवायें बहुत कर रहें, पर जिसकी सेवा कर रहे उसी को भूले हुये हैं। मुम्बई में सबसे पहली प्रदर्शनी जब लगी थी, अव्यक्त बापदादा का संदेश आया था एक पेज का- बच्चों ने बहुत अच्छा प्रोग्राम किया, बच्चों पर बाबा खुश हैं, बच्चों में उमंग-उत्साह बहुत हैं, अच्छा-अच्छा किया और आगे बढ़ते रहो सफलता बच्चों के गले का हार है, बापदादा बहुत खुश है और लास्ट में एक लाइन थी- सेवा बहुत अच्छी की। पर बच्चे बाप को भूले हुये थे, फुलस्टॉप। क्या कहा बाबा ने? सेवा बहुत अच्छी की पर बच्चे बाप को भूले हुये थे, पूरा कर दिया सब। जिसकी सेवा कर रहे, उसी को भूले, जिसके लिये जीवन दे दिया है, वो बुद्धि में हैं ही नहीं, कुछ और ही बुद्धि में चल रहा है, इसीलिये खालीपन है। रेगिस्तान की तरह है, कोई दूर-दूर तक नजर नहीं आता है। नजर भी आता है, भाग के जाते हैं वहां जल हैं - देखते हैं वहां जल हैं ही नहीं, मृगमरीचिका मिराज। पानी है दिखा, पर था ही नहीं, फिर उदासी, फिर नैराश्य, फिर अवसादग्रस्त। यदि जीवन में खालीपन आ रहा है तो मौन और एकांत की आवश्यकता है, स्व चैकिंग की आवश्यकता है। क्यों ये खालीपन है? कौन सी चीज, अंदर जो हैं जो होनी चाहिए, और नहीं है? हो सकता है- अमृतवेला शक्तिशाली नहीं हो रहा है। ऐसे कितने लोग यहां हैं, सामने देखेंगे आजू-बाजू नहीं देखना पिछले एक मास में जिन्होंने एक बार भी अमृतवेला मिस नहीं किया? हाथ खड़ा करेंगे, बस। पिछले 15 दिनों में जिन्होंने एक बार भी अमृतवेला मिस नहीं किया? पिछले एक हफ्ते में एक बार भी अमृतवेला मिस नहीं किया? आज सुबह ही जिनका अमृतवेला मिस हो गया है वो मन में हाथ खड़ा करेंगे। **अमृतवेला फाउण्डेशन है इस जीवन का। कितने भी लेक्चर सुन लो, और करा लो, कितनी भट्टियां कर लो, कितनी बार भी मधुवन चले जाओ, कितनी सारे दिन भर सेवायें कराओ, करो, अमृतवेला मिस हाथ खाली। दिन भर खालीपन रहेगा अकेलापन रहेगा।** हिंदी में दो शब्द हैं- एक है एकांत, एक है अकेलापन। क्या अंतर है दोनों में? या एक ही है दोनों। क्या अलग-अलग है? मुझे एकांत अच्छा लगता है। एकांत आनंद की अवस्था है, अकेलापन उदासी की अवस्था है। एकांत में व्यक्ति चिंतन करता है,

अकेलेपन में निगेटिव थिंकिंग करता है। जीवन में ऐसा-ऐसा क्यों हुआ? सब मेरे साथ खराब करते, मेरा तो दुर्भाग्य ही ऐसा है। उधर भी वैसा ही था, यहां आने के बाद भी वैसा ही है, हमेशा जीवन में खराब ही होता आया है। पति भी मिला तो ऐसा, बच्चे भी मिले तो ऐसे। ज्ञान में आये उसमें भी दुःख, सबको टोली मिल रही, हम गये तो सबसे छोटा आम हमको मिला, यह भी दुर्भाग्य, सबको बड़े-बड़े आम मिलें, पता नहीं मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है? गाड़ी से जा रहे थे, गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया, सब बच गये हमारा ही फ्रैक्चर हो गया, पता नहीं क्या हैं? जीवन को हमारे साथ। वो तो छोड़ो, सबको रसगुल्ले मिल रहे हैं, उनके रसगुल्ले मेरे रसगुल्ले से बड़े हैं- छोटा ही मिला हमको। उसमें भी दुःख, हर चीज में दुःख। दुर्भाग्य से भर गया है जीवन। जैसे तो अकेलापन है। डायगनोसिस करना है, अकेलेपन का ट्रीटमेंट चालू करनी है, और ट्रीटमेंट है शक्तिशाली अमृतवेले। अमृतवेला पर एक किताब है, किस-किस ने पढ़ी है, यज्ञ की? जिसने पढ़ी है, अभी फिर से पढ़ना चालू करेंगे, दो दिन के बाद और जिनके पास है ही नहीं, सबसे पहले वो किताब पढ़ो अगले एक मास तक। कुछ दूसरा पढ़ना ही नहीं, दिन-रात अमृतवेले की किताब पढ़ो। क्योंकि अमृतवेला ही नहीं हो रहा है। उसमें लिखा है- अमृतवेला के महत्व का, अमृतवेले की समस्या का, अमृतवेला क्या करना चाहिए? क्या-क्या बांते अमृतवेला? किन-किन बांतों का प्रयोग करो? कैसे प्रयोग करो? पहले जानकारी बढ़ाओ, अवेयरनेस जब आयेगी तो करना चालू करेंगे, तब तक है ही नहीं। तो क्यों करेंगे?

**5. पांचवा : भूकम्प - अर्थक्वेक।** कौन सा भूकम्प? दिल टूट जाना। जैसे भूकम्प में दरार पड़ती है, दिल में दरार पड़ जाती है। दिल टूट गया, किसी ने दिल तोड़ दिया। बहुत बड़ी परिस्थिति है, दिल जब टूट जाता है तो जुड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। दिल के टुकड़े हजार कोई यहां गिरा कोई वहां, मुरलियों में आता हैं ना। दुनिया वालों को दिल दो, क्या करेंगे वो? टुकड़े-टुकड़े करके रख देंगे। इंग्लिश में कहावत है- गिव यूअर हार्ट टू गॉड एण्ड यू विल नेवर हेव हार्ट अटैक (Give your heart to God and you will never have heart attack) । **अपना दिल किसको दे दो? भगवान को दे दो, तो कभी हृदयघात नहीं होगा।** पहले तो अपने आपको वज्र के समान शक्तिशाली बनाना है। दिल को शक्तिशाली बनाना है। **इमोशनल स्टेबिलिटी।** जिसकी भावनायें कमजोर है, जरा कोई फूंक मार दे, उड़ जाते हैं। मुरलियों में आता है- छुई-मुई, हाथ लगा दिया बस गये। किसने थोड़ा कुछ बोल दिया, गये, दिल टूट जाता है। रात भर रंगोली निकालो, सुबह कोई आता है, कहता है- ये फालतू है एकदम, गये। आज के बाद कभी नहीं निकालेंगे, प्रतिज्ञा। कितना भी बुलाओ, अब नहीं निकालेंगे। बहुत भोजन बनाया, ब्रह्मा भोजन 6 घण्टा,

कोई आकर कहता है- ये किसने बनाया? एकदम टेस्टलेस, तुमको तो आता ही नहीं कुछ, बस सुन लिया और गये। अभी आज के बाद कभी किचिन में ही एन्ट्री नहीं करेंगे, बहुत हो गया। उदास। जरा सी किसी ने ग्लानि कर दी, जरा सा अपमान कर दिया, जरा सा कुछ बोल दिया, कि गये। माता जी आये मधुबन में, सेवा की दो महीना, बहुत खुशी-बहुत खुशी-बहुत खुशी। जाते समय किसी ने बोल दिया- क्यों माता जी, खाये-पिये और चल दिये? बस, गई सारी खुशी, खलास। बहुत एश कर लिया मधुबन में अब जा रहे हो? पूरा दिल ही टूट गया। बाबा के कमरे में जाकर जार-जार रो रहे। थोड़ा सा किसी ने कुछ बोल दिया गये। डायमण्ड हॉल में बैठे बाबा मिलन में, किसी ने कहा- उठो ये हमारी जगह है, उठ गये, उठकर दूसरी चेयर पर जाकर बैठे, उधर से दूसरा आया, अरे! ये मेरी है, रिजर्व। उठो, फिर उठे, फिर नीचे जाकर बैठ गये। उसने कहा- तुम सेवाधारी सेवाधारियों के लिये पीछे हैं, जाओ वहां पर। बस खलास, प्रभु मिलन का आनंद गया। किसके चक्कर में? कुर्सी के चक्कर में। दुःखी उदास, हम इतना अच्छे हैं, लोग हमारे बारे में ऐसा-ऐसा बोलते हैं- बड़ा दुःख हुआ सुनकर। ऐसा ही बोलेंगे, ऐसा ही बोलना चाहिए। तो **सबकुछ सहन करने की ताकत हमारे अंदर हो, सबकुछ। निंदा स्तुति, ग्लानि, अपमान, ऐसे ही शक्तिशाली थोड़े ही बनेंगे। जितने ज्यादा तीर चुभे होंगे, उतना व्यक्ति अधिक शक्तिशाली।**

किसी ने एक चित्र भेजा था, दो हिरणों का, पहला हिरण एक तीर चुभा है, घायल होकर गिर गया, बाजू में। अब वो ही हिरण बूढ़ा हो गया, पूरे शरीर में तीर ही तीर चुभे हैं, पर खड़ा है, this is known as spiritual maturity, **आध्यात्मिक परिपक्वता**। सारे आघात सहन करते हुये भी खड़े रहना और जो कमजोर होते हैं, बहुत ज्यादा सेंसिटिव होते हैं - अति संवेदनशील बस आंसू, रोना आता हैं। वो कैसे मार्ग पर बढ़ पायेंगे, यहां तो सिक-सिक, छुक-छुक, मर-मर। ओखली में सिर दिया है, तो मूसलों से क्या डर? ओखली में सिर दिया हैं ना? ये यज्ञ ओखली है, आये न इसमें? अब खाओ डण्डे और मूसल कौन है? एक-एक ब्राह्मण आत्मा मूसल है। कोर्स के समय तो हमें ऐसा कुछ बताया नहीं था, तब तो कहा था- कि सुख-शांति का मार्ग हैं, और यहां आते ही पेपर चालू हो गये। अर्थक्वेक, दरार कुछ भी हो जाये मजबूत रहना है, अंदर से शक्तिशाली रहना है।

**6. छठवां : बाढ़** - कौन सी बाढ़? पुराने संस्कारों की बाढ़। ये भी एक आफत है, पुराना मिट चुका था, खत्म हो गया था, अचानक से पुराना संस्कार आ गया। हमने सोचा था पुराने संस्कार तो मिट गये, पर वो तो मिटे ही नहीं, अपने आप आ गये, भस्म हो गये थे, ऐसा लगा। राख से फिनिक्स पक्षी होता है, फिर से जीवित हो जाता है। वैसे संस्कार जीवित हो जाते हैं, और ये भी बाढ़ आयेगी। इसीलिये कभी भी

overconfident नहीं हो जाना है, कि ये जो मेरा पुराना संस्कार था, रोने का अब बिल्कुल नहीं है। अब मैं बिल्कुल नहीं रोती, अब मैं बहुत अच्छी हूँ, उसी दिन रोना आयेगा, जिस दिन ये सोचेंगे। जब भी ये सोचते हैं, कि बस अब मैंने इसको जीत लिया, काम विकार को। अब बस मेरे तो इर्द-गिर्द भी नहीं भटकता, मैं अखण्ड ब्रह्मचारी, बहुत अच्छा, उसी दिन ऐसी माया आयेगी, कि खलास। जीत का भी अहंकार न हो विकार के। तो ये भी होगा, पुराने संस्कारों की बाढ़ आयेगी। इसके लिये सतर्क रहना है, अलर्ट रहना है। चौकस-चौकन्ना, हर समय निरंतर जागृति, *तस्मात् जागृतः*।

**7. सातवां : पहाड़ - गोवर्धन पर्वत** - मुश्किलों के पहाड़, कठिनाइयों के पहाड़ टूटेंगे, जो कठिनाई जो मुश्किलें आज तक नहीं आई थी, वो अचानक आयेंगी। जो परिस्थिति, जिनके बारे में सोचा भी नहीं था, अचानक से सामने आ गई। क्या करेंगे? बच्चा, जो अब तक ज्ञान में चलता था, अचानक ज्ञान में चलना बंद कर दिया। कन्या, अब तक जो ज्ञान में चलती थी अब कहती है- मुझे शादी करनी है। कॉलेज में बच्चे को भेजा, एडिक्शन हो गया, ड्रग्स ले रहा है। अचानक पता चला बुरे संग में चला गया है, अब किसी की सुनने को तैयार नहीं। अचानक पता चला, जिसके लिये इतना खर्च किया, इतनी एडमिशन ली, मेडिकल कॉलेज में एडमिशन दिलाई और अभी 6 महीने के अंदर बच्चा कहता है कि मुझे मेडीकल में पढ़ाई करनी ही नहीं है। अचानक कोर्ट केस, अचानक ब्लेम। कुछ भी होगा तो ऐसे पहाड़ टूटने हैं, डरने की बात नहीं है। परंतु अपने आपको अंदर से सशक्त बनाना है। इसीलिये कहा- जिन्होंने अमृतवेला किताब नहीं पढ़ी है, अगले एक मास तक वहीं किताब पढ़ते रहना। तब तक, जब तक अमृतवेला सहज नैचुरल न हो जाये। एक दूसरा काम, जो करना है, वो है- मुरली चिंतन मुरली अध्ययन, पढ़ना से केवल कुछ नहीं होगा, न ही केवल पढ़कर सुनाने से। तीसरा काम करना है, वो है- चिंतन, मुरली चिंतन रोज की मुरली सुनते-सुनते ही, उसमें से टॉपिक्स निकाल लेने हैं। 5 कोई भी टॉपिक, बस टॉपिक नोट करके रखो। फिर सारे दिन सोचना, इसमें क्या हो सकता है? इसमें क्या हो सकता है? उसमें क्या हो सकता है? चिंतन करते रहना है। तो बुद्धि थोड़ी ऊपर रहेगी शरीर से, संसार के दुःखों से। **नहीं तो दुःख डुबो देंगे**, क्योंकि संसार का चिंतन करते-करते दुःखी हो जाता है।

**ओम शांति**